हिमाचल प्रदेश के वनों को उनकी भव्यता के लिए जाना जाता है। इन वनों में कई तरह की वनस्पतियां एवं जीव-जन्तु हैं। हमारे देश में पाई जाने वाली कुल **45,000** वनस्पतियों की प्रजातियों में से लगभग **3,295** प्रजातियां हिमाचल प्रदेश में पाई जाती हैं।

प्रदेश का वर्गीकृत वन क्षेत्रः
कुल क्षेत्रफल का 66.52 प्रतिशत
वन आवरण क्षेत्रः
कुल क्षेत्रफल का 26.4 प्रतिशत

आईए अपने वन क्षेत्र को बढ़ाएं।

हिमाचल प्रदेश में पर्यावरण संरक्षण एवं जलवायु परिवर्तन के पर्यावणीय प्रभावो के शमन को प्रोत्साहन

हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश के विभिन्न व्यक्तियों, संस्थाओं, संगठनों द्वारा प्रदेश की अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के सतत् विकास हेतु किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों को प्रोत्साहित देने के लिए 'हिमाचल प्रदेश पर्यावरण उत्कृष्टता पुरस्कार' प्रत्येक वर्ष दिया जाता है। हिमाचल प्रदेश सरकार संवेदनशील हिमालयी क्षेत्र के पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रदेश में सतत् विकास की नीति को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रदेश में उपस्थित विभिन्न संगठनों के सहयोग से सतत् एवं कार्बन स्मार्ट आर्थिक विकास की दिशा की ओर पर्यावरण के संरक्षण हेतु अपनाई जा रही उत्तम कार्यप्रणाली को प्रोत्साहन देने का यह एक प्रयास है।

यह पुरस्कार प्रत्येक वर्ष बारह विभिन्न श्रेणियों के अन्तर्गत शहरी स्थानीय निकायों, अस्पतालों, होटल और रिसार्ट्स, शैक्षणिक संस्थानों, स्कूलों, कार्यालय परिसरों, उद्योगों, पंचायतों, कल्याण समीतियों, रेस्तरां, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशनों/हवाई अड्डों आदि संस्थाओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं सतत् विकास हेतु अपनाई जा रही उत्कृष्ट कार्यप्रणालियों में उनके योगदान के लिए प्रदान किया जाता है ताकि वे पर्यावरण संरक्षण के प्रहरी एवं मार्गदर्शक बनें। आप भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

जलवायु परिवर्तन से पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों को कम करने हेतु साधारण उपायः

Think Green
Reuse Recycle

- हम अपने राज्य को स्वच्छ एवं हरा-भरा रखने सम्बन्धी विभिन्न गतिविधियों में भाग ले सकते हैं।
- हम स्थानीय एवं लुप्त हो रही पौधों की प्रजातियों का पौधरोपण कर सकते हैं।
- हम पेड़ों को काटने या उखाड़ने की गतिविधियों से दूर रह सकते हैं।
- हम औषधिय पौधों का रोपण कर उनके उपयोग को बढ़ावा दे सकते हैं।
- हम हरे कचरे को खाद में परिवर्तित कर सकते हैं।
- कार्बन उत्सर्जन कम करने के विभिन्न तरीकों को अपना सकते हैं।
- उर्जा के उपयोग को कम कर सकते हैं।

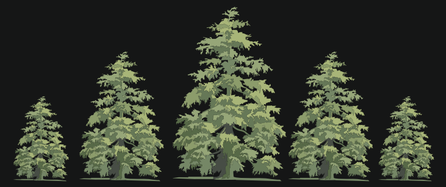

सम्पर्कः

निदेशक एवं राज्य नोडल अधिकारी,
हिमाचल प्रदेश जलवायु परिवर्तन ज्ञान प्रकोष्ठ,
पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार
पर्यावरण भवन, शिमला, हिमाचल प्रदेश-171001
दूरभाषः 0177–2656559, 2659608 फैक्सः 0177–2659609
ई-मेलः s.attrigohp@gmail.com, dbt-hp@nic.in
वैब साईटः desthp.nic.in, twitter @desthp

Department of Science & Technology
Ministry of Science & Technology
Government of India

NMSHE NATIONAL MISSION FOR SUSTAINING HIMALAYAN ECOSYSTEM

स्वच्छ एवं हरा-भरा
हिमाचल प्रदेश

जलवायु परिवर्तन के पर्यावरणीय प्रभावों को कम करें

पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
हिमाचल प्रदेश सरकार

वन आवरण क्षेत्र - भारत

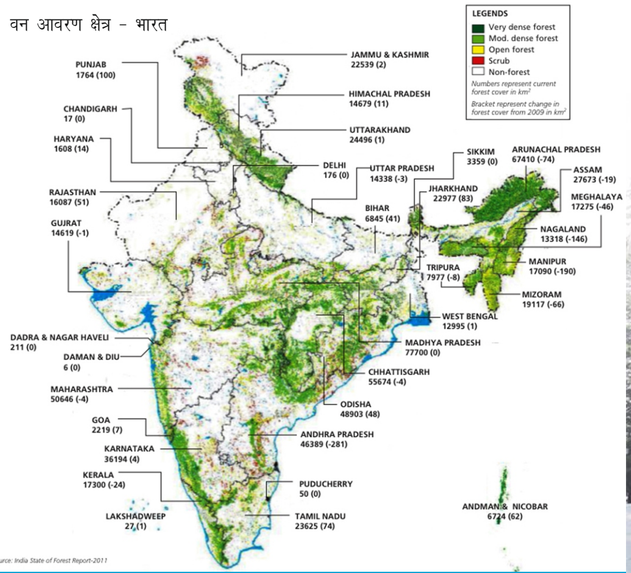

Source: India State of Forest Report-2011

देव वन एवं पर्यावरण संरक्षण

देव वनों का पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान है। हिमाचल प्रदेश को देव भूमि भी कहा जाता है। प्रदेश के गांवों में देवी-देवता का अपना जंगल होता है इसे देवता का वन भी कहा जाता है। देव वनों की यह परम्परा हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र के मंदिरों एवं देवी देवताओं के स्थलों में प्रचलित है। यह देव वन पूर्णतया देवी-देवता द्वारा ही संरक्षित होते है तथा किसी एक देवी-देवता के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। यहां के ग्रामीण की इन देवी देवताओं के प्रति अटूट आस्था होने के कारण कोई भी इन वनों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाते, इस प्रकार ये जंगल अनेकों वर्षों से संरक्षित हैं। अतः ये देव वन अनेक प्रकार से यहां की जैव-विविधता के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। हमें पर्यावरण संरक्षण हेतु इस देव-परम्परा को कायम रखने का प्रयास करना चाहिए।

वनों का महत्व

वन तथा जंगल हमें कई प्रकार के सामाजिक, पर्यावरणीय एवं आर्थिक लाभ प्रदान करते हैं।

पर्यावरणीय लाभ

- जीवन के लिए आवश्यक आक्सीजन पेड़ों से मिलती है।
- वन कार्बन उत्सर्जन को अवशोषित कर जलवायु परिवर्तन के शमन में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
- एक पेड़ अपने पूरे जीवन काल में लगभग एक टन कार्बन डाईआक्साईड गैस अवशोषित करता है।
- जंगल जैव विविधता का संरक्षण कर अनेक प्रकार के जीव-जन्तुओं एवं पेड़ पौधों के लिए आवास उपलब्ध करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- वन हमारे वातावरण एवं जल को शुद्ध कर प्रदूशण से मुक्ति दिलाते हैं।
- पेड़ परिदृष्यों को हरा भरा एवं सुन्दर बनाते हैं।
- पेड़ मिट्टी के कटाव को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सामाजिक लाभ

- वन फूलों एवं अनेक वनस्पतियों से हमारे जीवन में रंग भरते हैं।
- वन हमें प्रकृति से जोड़ते हैं।
- वन हमें रोगों, तनाव से मुक्ति पाने एवं सेहत सुधारने में सहायक होते हैं।
- वन हमें कई प्रकार के सौंदर्य लाभ प्रदान करते हैं।
- वन जलवायु को ठण्डा रख हमें गर्मी से मुक्ति प्रदान करते हैं।
- वन अनेक गतिविधियों से होने वाले शोर को बाधित कर शांति प्रदान करते हैं।

आर्थिक लाभ

- वन इमारती लकड़ी, दवाईयां फल एवं भोजन प्रदान करते हैं।
- वन मनोरंजन एवं पर्यटन उद्योग को बढ़ाने में सहायता करते हैं।

भारत में वनों का इतिहास

कार्बन उत्सर्जन में कमी कर जलवायु परिवर्तन की गति को लगाम देनें में वनों के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। भारत में घने वनों के होने के तथ्य मौजूद हैं, परन्तु जैसे जैसे मनुष्य ने प्रगति की वन क्षेत्र में कमी आती गई, जिसका मुख्य कारण जन संख्या का दबाव एवं वनों पर अधिक निर्भरता होना है। अनेक ऐतिहासिक दस्तावेजों में लोगों द्वारा वनों के संरक्षण के कई उदाहरण मिलते हैं। लगभग चार हजार वर्ष पूर्व लिखे अग्नि पुराण में कहा गया है यदि मनुष्य को भौतिक लाभ एवं भगवान की कृपा लेने के लिए पेड़ों की रक्षा करनी चाहिए। लगभग पच्चीस सौ वर्ष पूर्व भगवान बुद्ध ने यह प्रचार किया था कि मनुष्य को अपने जीवन में हर पांच वर्ष में कम से कम एक वृक्ष लगाना चाहिए। सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने तीन सौ ईसा पूर्व ही वनों के महत्व को समझते हुए वनों के प्रबन्धन हेतु उच्च अधिकारियों की नियुक्ति की थी तथा बड़े पैमाने पर पेड़ लगाने के कार्यक्रम की शुरुआत की। ब्रिटिश शाषन के प्रारम्भिक काल में बड़े पैमाने पर चंदन, साल तथा सागौन के पेड़ों को बिना सोचे समझे निर्यात करने के लिए गिराया गया परन्तु कुछ समय पश्चात् वनों के महत्व को समझते हुए उन्होंने इसके संरक्षण हेतु कई नियम बनाए जिनमें भारतीय वन अधिनियम १९२७ प्रमुख है। भारत की आजादी के बाद भी वनों के संरक्षण हेतु बनाई महत्वपूर्ण ब्रिटिश नीतियों को जारी रखा गया। वर्ष १९७६ तक राज्यों द्वारा वनों को आय के मुख्य स्रोत के रूप में देखा जाता रहा परन्तु वर्ष १९७६ में वनों के प्रबन्धन एवं शाशन को समवर्ती सूची के तहत लाया गया तथा 'विनाश बिना विकास', 'अस्तित्व के लिए वन' जैसे विषयों को लेकर पंच वर्षीय योजना तैयार की गई। आज भी भारत सरकार वनों के संरक्षण हेतु प्रयासरत है।